

# डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 7, पुस्तक सर्वेक्षण, प्राथमिक संरचनात्मक संबंध और प्रश्न

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बाउर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 7, पुस्तक सर्वेक्षण, प्राथमिक संरचनात्मक संबंध और प्रश्न है।

हम प्राथमिक संबंधों पर चर्चा करते रहे हैं। हम अब सहायक संबंधों की ओर बढ़ना चाहते हैं। मैंने वादा किया था कि इस बिंदु पर मैं प्राथमिक संबंधों और सहायक संबंधों के बीच अंतर बताऊंगा। प्राथमिक संबंध एक ऐसा संबंध है जिसका उपयोग स्वयं किया जा सकता है।

अब, कभी-कभी, जैसा कि हमने देखा है, वे संयुक्त हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, हमने नीतिवचन की पुस्तक में विरोधाभास की पुनरावृत्ति के बारे में बात की है। बार-बार, बार-बार, आप बुद्धिमत्ता और मूर्खता के बीच विरोधाभास रखते हैं।

इसलिए, उन्हें जोड़ा जा सकता है, लेकिन उन्हें मिलाना ज़रूरी नहीं है। आप प्राथमिक संबंध केवल अकेले ही बना सकते हैं। जबकि, सहायक संबंधों का उपयोग आम तौर पर स्वयं नहीं किया जाता है, बल्कि प्राथमिक संबंधों को मजबूत करने के लिए प्राथमिक संबंधों के साथ संयोजन में किया जाता है।

सहायक संबंधों का उपयोग आम तौर पर स्वयं द्वारा नहीं किया जाता है, बल्कि प्राथमिक संबंध को मजबूत करने के लिए प्राथमिक संबंध के साथ संयोजन में किया जाता है, क्योंकि इन सहायक संबंधों का संबंध केवल सामग्री के स्थान, व्यवस्था से होता है। वे जुड़ाव की भावना को संबोधित नहीं करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उनके साथ कोई अर्थ जुड़ा हुआ नहीं है।

वे इंद्रिय जुड़ाव को संबोधित नहीं करते हैं। जबकि, प्राथमिक रिश्तों में इंद्रिय जुड़ाव शामिल होता है। उदाहरण के लिए, विपरीतता के संबंध में अंतर या तुलना की भावना संबद्धता, समानता या विशिष्टीकरण की भावना संबद्धता, विशिष्टता की भावना संबद्धता शामिल है।

लेकिन, आपके पास सहायक रिश्तों में निहित जुड़ाव की उस तरह की भावना नहीं है। लेकिन, तथ्य यह है कि लेखक संरचना का उपयोग करते हैं, आम तौर पर, अर्थ को संप्रेषित करने के लिए, उन्हें स्वयं सहायक संबंधों का उपयोग नहीं करने के लिए प्रेरित करते हैं, बल्कि प्राथमिक संबंधों के साथ संयोजन में उस भावना संबंध को मजबूत करने के लिए करते हैं जो कि प्राथमिक संबंध के भीतर निहित है जिसे मजबूत किया जा रहा है। उस सहायक संबंध द्वारा जिसके साथ इसका उपयोग किया जाता है। अब, इनमें से कुछ सहायक रिश्ते हैं जिनका हम यहां उल्लेख करेंगे।

पहला इंटरचेंज है, जो कुछ तत्वों का आदान-प्रदान या विकल्प है, आमतौर पर सामग्री के ब्लॉक के संदर्भ में। आपके पास यह तब होता है जब आपके पास एबी, एबी प्रकार की व्यवस्था में दो चीजों के बीच आगे और पीछे, विनिमय या विकल्प के बीच एक विकल्प होता है। विद्वान कभी-कभी इसे धारीदार संरचना, एबी, एबी, प्रत्यावर्तन, सामग्री के ब्लॉक के रूप में संदर्भित करते हैं।

पुस्तक स्तर पर इंटरचेंज का एक उदाहरण मीका की पुस्तक में इंटरचेंज होगा, जहां आपको अपराध और सजा की घोषणाओं के ब्लॉक और अवशेषों की बहाली के संबंध में घोषणाओं के ब्लॉक के बीच लगातार आगे-पीछे होना पड़ता है। तो, आप देखेंगे कि आपको 1:2बी से 2:11 में अपराध और सजा मिली है, इसके बाद 2:12 से 13 में धर्मी अवशेष की बहाली होगी। फिर, 3:1बी से 12 में, वह वापस अपराध और सजा की ओर चला जाता है .

और 4:1 से 5:15 में, वह अवशेषों की पुनर्स्थापना पर वापस जाता है। और फिर 6:1बी से 7:14 में, वह अपराध और सजा की ओर वापस जाता है। और फिर पुस्तक अंतिम खंड के साथ समाप्त होती है जो अवशेषों की बहाली से संबंधित है।

तो, एबी, एबी, एबी। अब यहाँ, निश्चित रूप से, स्पष्ट रूप से, इंटरचेंज का उपयोग कंट्रास्ट को मजबूत करने के लिए किया जाता है। वह यहां इसराइल के अपराध और इसराइल के अपराध पर उचित निर्णय और इसराइल के बचे हुए लोगों को दयालुतापूर्वक बहाल करने के ईश्वर के दृढ़ संकल्प के बीच अंतर पर जोर दे रहा है।

अब, वास्तव में, सामग्री के खंडों का यह विकल्प लेखक के लिए एक तरफ इज़राइल के अपराध और सजा और दूसरी तरफ यहोवा द्वारा अवशेषों की बहाली के बीच अंतर पर जोर देने का एक तरीका है। तो, यह वास्तव में विरोधाभास को उजागर करता है। यह इसे और अधिक स्पष्ट करता है, इसके महत्व को प्रकट करता है।

यही कारण है कि वह कंट्रास्ट को मजबूत करने के लिए इस इंटरचेंज का उपयोग करता है। लेकिन इससे परे, यह निरंतर आगे-पीछे होना लेखक को वास्तव में मतभेदों के विशिष्ट आयामों को विकसित करने की अनुमति देता है जो वह अन्यथा इन ब्लॉकों को एक-दूसरे के खिलाफ रखकर नहीं कर पाएगा। एक अन्य प्रकार का सहायक संबंध अंतर्संबंध है।

हमारे पास यह तब होता है जब इसमें एक साहित्यिक इकाई को दूसरी साहित्यिक इकाई के बीच में सम्मिलित करना शामिल होता है। अब, आप इसे पत्र-पत्रिका सामग्री में नहीं रख सकते। तथाकथित पॉलीन विषयांतर अंतर्संबंध का एक रूप हो सकता है।

लेकिन आमतौर पर, आपके पास कथा सामग्री में अंतर्संबंध होता है। यदि आप इसे चित्रित कर सकते हैं, तो यह ऐसा है जैसे एक लेखक के पास एक कहानी है, और वह उस कहानी को अलग कर देता है और फिर उस कहानी के बीच में एक और कहानी को गिरा देता है, जिसका सतही तौर पर कोई लेना-देना नहीं है। वह कहानी जो इसके चारों ओर है। और वास्तव में बात यही है।

यह वास्तव में अंतर्संबंध की शक्ति है। जब आपके पास इस प्रकार का अंतर्संबंध होता है, तो यह लेखक के लिए पाठक को रुकने और अपना सिर खुजलाने और कहने के लिए प्रेरित करने का

एक तरीका है, यहाँ वास्तव में क्या संबंध है? और आस-पास की कहानी के बीच में रुकी हुई यह कहानी आसपास की कहानी को कैसे रोशन करती है? और वह, वह आसपास की कहानी उस कहानी को कैसे रोशन करती है जो उसके भीतर छिपी हुई है? दूसरे शब्दों में, वे परस्पर प्रकाशमान हैं। अब, अंतर्संबंध का एक उदाहरण उत्पत्ति 38 में है।

आपको याद होगा कि उत्पत्ति की पुस्तक में, अध्याय 37 से 50 तक, हमारे पास तथाकथित जोसेफ कथा है। उत्पत्ति 37 से 50 वास्तव में जोसेफ से संबंधित है। जोसेफ कथा अध्याय 37 में शुरू होती है।

लेकिन अध्याय 38 में, आपके पास यहूदा की कहानी है, जो निस्संदेह यूसुफ का भाई है, यहूदा और तामार, जिसका सतही तौर पर यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी से कोई लेना-देना नहीं है। अध्याय 37 में शुरू होता है और अध्याय 39 में जारी रहता है और अध्याय 50 तक चलता है। तो, पाठक को रुककर यह पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि, जोसेफ कथा में यहूदा और तामार के बारे में यह कहानी क्या कर रही है? अब, आपको याद है कि अध्याय 37 में यहूदा और तामार के मामले में क्या हुआ था, कि तामार का विवाह यहूदा के पुत्रों में से एक से हुआ था और वह मर गया। प्रथा में लेविरेट कानून के अनुसार, उसके भाई को उसकी जगह लेनी थी और अपने भाई के लिए बच्चों का पालन-पोषण करना था, जो वाचा के लोगों को जारी रखने के लिए, वंश को जारी रखने के लिए, वंश को जारी रखने के लिए मर गया था, जो था यह केवल पारिवारिक हित और चिंता का मामला नहीं था, बल्कि इसका संबंध वास्तव में वाचा के लोगों की वंशावली को जारी रखने से था, उस वाचा को पूरा करने से था जिसे ईश्वर ने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ बनाया था, कि वह उनके वंशजों को सितारों के रूप में बनाएगा आकाश और संसार के समुद्रतटों पर रेत के समान।

जब भाई अंदर आया, जिस पर वैवाहिक संस्कार करने और अपने भाई के लिए बच्चों का पालन-पोषण करने का दायित्व था, तो उसने ऐसा न करने के लिए अपना बीज जमीन पर गिरा दिया। और, निःसंदेह, परमेश्वर इससे अप्रसन्न हुआ, और उसे मार डाला गया। तामार इस पूरी स्थिति के बारे में बहुत चिंतित था और इसके संबंध में बेहद नाखुश था, खासकर जब यहूदा ने अपने दूसरे बेटे को तामार के लिए उपलब्ध कराने से इनकार कर दिया था।

और इसलिए, तामार वास्तव में बाहर गई और खुद को एक वेश्या के रूप में तैयार किया। यहूदा यह सोच कर कि वह एक वेश्या के साथ यौन संबंध रख रहा है, उसके साथ अंदर गया और अनजाने में, अनजाने में, बच्चों को लाइन में खड़ा कर दिया। अब, एक बार जब आप विचार करते हैं कि उत्पत्ति के अध्याय 38 में वास्तव में क्या चल रहा है, तो आप देखेंगे कि यह जोसेफ कथा में कैसे कार्य करता है, कि यह जोसेफ और उसके भाइयों के बीच विरोधाभास को रेखांकित करता है, जिसका प्रतिनिधित्व यहां उसके भाई यहूदा ने किया है।

तुम्हें याद होगा, यूसुफ वास्तव में पोतीपर की पत्नी द्वारा बहकाया गया था। वह व्यभिचार में यौन अनैतिकता में शामिल होने से इनकार करता है, जबकि यहूदा एक ऐसी महिला के पास जाता है जिसे वह वेश्या समझता है और उसके साथ आकस्मिक यौन संबंध बनाता है। इसके अलावा, जोसेफ क्या करता है, या हम कह सकते हैं कि भगवान जोसेफ के माध्यम से यहां अध्याय 39 से

50 में क्या करता है, वह वाचा के लोगों को विनाश से बचाता है और इब्राहीम, इसहाक और याकूब के वंशजों के संबंध में ईश्वर की वाचा के वादों को जारी रखना संभव बनाता है।

और फिर, इसका संबंध इस बात से है कि भगवान यहां अध्याय 38 में क्या करता है। अध्याय 39 से 50 में वह जारी रखता है कि भगवान यूसुफ के माध्यम से, यूसुफ की आज्ञाकारिता के माध्यम से, जोसेफ की विश्वासयोग्यता के माध्यम से, और जोसेफ की ईमानदारी के माध्यम से वाचा की रेखा को जारी रखने का कारण बनता है। लेकिन परमेश्वर अध्याय 38 में यहूदा के माध्यम से, भाइयों की बेवफाई के माध्यम से, उनकी ईमानदारी की कमी के माध्यम से, और उनके व्यभिचार के माध्यम से वाचा की पंक्ति को जारी रखने के लिए भी काम कर रहा है।

फिर से, आप देख सकते हैं कि कैसे जोसेफ की कहानी यहां यहूदा और तामार से संबंधित अंतर्संबंधित सामग्री द्वारा सूचित और प्रकाशित की गई है और यहूदा और तामार की कहानी कैसे समझ में आती है। हम समझते हैं कि लेखक के मन में क्या है, जिससे हम इसे चारों ओर से घेरने वाली जोसेफ कथा के विपरीत एक अंतर्संबंध के रूप में समझते हैं। मैं आपको इसका एक अतिरिक्त उदाहरण देने जा रहा हूँ, जो मेरे ख्याल से बेहद मजेदार है।

और यह 1 शमूएल से आता है। यह 1 शमूएल से आता है, और मेरे पास यहां 1 शमूएल अध्याय 24 का संदर्भ है। वास्तव में, मुझे अध्याय 25, 1 शमूएल अध्याय 25 के बारे में कहना चाहिए।

आपको याद है, 1 शमूएल की पुस्तक के इस पूरे भाग में, वास्तव में 1 शमूएल 19 से आगे, आपको दाऊद और शाऊल के बीच संघर्ष है। शाऊल पर प्रभु की ओर से एक दुष्ट आत्मा आती है, और निःसंदेह, शाऊल को दृढ़ता से संदेह है कि दाऊद को भगवान ने शाऊल का उत्तराधिकारी और वास्तव में राजा के रूप में उसके स्थान पर चुना है। और इसलिए, इन अध्यायों में शाऊल द्वारा बार-बार डेविड का पीछा किया जाता है और निस्संदेह, प्रत्येक मामले में वह बच निकलता है।

लेकिन इस कहानी के बीच में, दाऊद द्वारा शाऊल का पीछा किए जाने और बार-बार उससे बच निकलने की इस कथा के बीच में, हमारे पास अध्याय 25 है, जो नाबाल की कहानी है। यहाँ, डेविड का सामना इस गंवार नाबाल और उसकी पत्नी अबीगैल से होता है। नाबाल डेविड और डेविड के नौकरों के साथ शर्मनाक व्यवहार करता है और आतिथ्य के संस्कार नहीं करता है जो प्राचीन निकट पूर्व संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

दाऊद उस पर क्रोधित हुआ, और अपने सब साथियों, अर्थात् उसके साथ के सब शूरवीरोंसमेत, नाबाल के पीछे इस विचार से चढ़ गया, कि उसे और जो कुछ उसका है, उन सब को नष्ट कर दे। लेकिन नाबाल की पत्नी अबीगैल बाहर आती है और डेविड से मिलती है और उसे उन विनाशकारी कार्यों से दूर कर देती है जो डेविड ने नाबाल के प्रति करना चाहा था। और दाऊद कहता है, निःसंदेह, अध्याय 25, श्लोक 32 में, दाऊद ने अबीगैल से कहा है कि उसने दाऊद को उस हत्या से अलग कर दिया था जो उसने नाबाल और नाबाल के घराने को मारने का इरादा किया था, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने आज तुम्हें मुझसे मिलने के लिए भेजा है।

धन्य है तेरी बुद्धि और धन्य है तू, जिस ने आज मुझे खून करने से और अपने हाथ से अपना पलटा लेने से रोक रखा है, क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहीवा निश्चय जीवित है, जिस ने मुझे तेरी हानि करने से रोका है, यदि तू ने ऐसा न किया हो। और तुरन्त आकर मुझ से भेंट करो, क्योंकि भोर तक नाबाल के पास एक भी पुरुष न बचा या। तब दाऊद ने जो कुछ वह उसके लिथे लाई थी उस से ले लिया, और उस से कहा, कुशल से अपने घर चली जा। देखो, मैं ने तुम्हारी बात सुन ली है।

मैंने आपकी याचिका मंजूर कर ली है. अब, सतही तौर पर, यह कहानी 2 सैमुअल के इस भाग में जो कुछ चल रहा है, उसके संबंध में अप्रासंगिक प्रतीत होती है, डेविड द्वारा शाऊल का पीछा करना और उससे बच निकलना। लेकिन आप यहां ध्यान दें कि लेखक जो एक कुशल कहानीकार है, 1 सैमुअल का लेखक अध्याय 25 में डेविड और नाबाल की कहानी और आसपास की सामग्री में डेविड और शाऊल की कहानी के बीच संबंध बनाता है।

अध्याय 24 में, वह अध्याय जो अध्याय 25 से ठीक पहले आता है, नाबाल की कहानी, और अध्याय 26 में भी, वह अध्याय जो नाबाल की कहानी के तुरंत बाद आता है, डेविड का सामना शाऊल से एक कमजोर स्थिति में होता है। वो सोया हुआ है। अध्याय 24 में शाऊल सो रहा है।

डेविड उसकी जान ले सकता था. दाऊद के सेवकों ने उससे शाऊल को मार डालने का आग्रह किया, परन्तु दाऊद ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। अध्याय 26 में, दाऊद गुफा में शाऊल से मिलता है।

जब शाऊल सो रहा होता है, खुद को राहत दे रहा होता है, और वास्तव में, मुझे कहना चाहिए, वह अध्याय 24 में गुफा में उसके पास आता है, और वह अध्याय 26 में सोता हुआ उसके पास आता है। और फिर, उसके नौकर उससे शाऊल को मारने का आग्रह करते हैं, लेकिन वह मना कर देता है ऐसा करने के लिए। वाक्यांशवैज्ञानिक संबंध पर भी ध्यान दें।

यहाँ, जब वह अध्याय 24 में एन गेदी की गुफा में शाऊल का सामना करता है, तो शाऊल उससे यही कहता है। तुम मुझ से अधिक धर्मी हो। तुम ने मुझ से भलाई का बदला लिया है, और मैं ने तुम से बुराई का बदला लिया है। ध्यान दें कि यह डेविड द्वारा 25, 21 में नाबाल के बारे में कही गई बात से कैसे संबंधित है।

निश्चय ही व्यर्थ ही मैं ने जंगल में उस मनुष्य की सब वस्तुओं की रखवाली की, और जो कुछ उसका था, उसमें से कुछ भी न खोया, और उस ने भलाई के बदले में बुराई से मुझ से बदला लिया है। वही बात, वही बात उन्हीं शब्दों में जो शाऊल दाऊद के बारे में कहता है। तुमने मुझे अच्छा बदला दिया है, जबकि मैंने तुम्हें बुरा बदला दिया है।

दाऊद 25, 22 में नाबाल के सम्बन्ध में कहता है, उसने भलाई के बदले बुराई से मुझे बदला दिया है। अध्याय 26 में जब शाऊल सो रहा था तब दाऊद ने शिविर में शाऊल की जान बख्श दी, शाऊल 26, 21 में कहता है, मैंने गलत किया है।

हे दाऊद, मेरे पुत्र को लौटा दे, क्योंकि मैं फिर तुझे हानि न पहुंचाऊंगा, क्योंकि आज के दिन मेरा प्राण तेरी दृष्टि में अनमोल है। देखो, इस पर ध्यान दो: मैं ने मूर्ख बनाया है और बहुत बड़ी गलती की है। शाऊल दाऊद के विषय में अपने विषय में कहता है, मैं ने मूर्ख बनाया है।

यह 25:25 में अबीगैल ने अपने पति नाबाल के बारे में जो कहा है, उससे जुड़ता है। मेरा प्रभु इस दुष्ट नाबाल को, इस दुष्ट नाबाल को बुरा न समझे; क्योंकि जैसा उसका नाम है, वैसा ही वह है। नाबाल, जिसका अर्थ, वैसे, मूर्ख है, नाबाल उसका नाम है और मूर्खता उसके साथ है।

इसके अलावा, अध्याय 25 में एक प्रकार की थकाऊ पंक्ति, 25:36 में डेविड और नाबाल की कहानी। और अबीगैल नाबाल के पास आई, और क्या देखा, कि वह अपने घर में राजा के समान जेवनार कर रहा है। इसलिए, लेखक यह दर्शाने के लिए जितना किया है उससे अधिक कुछ नहीं कर सका कि यहाँ शाऊल और दाऊद और नाबाल और दाऊद के बीच तुलना है।

वह नाबाल, वह शाऊल, और निस्संदेह, जो इंगित करता है वह यह है कि शाऊल मूर्ख है, वैसे ही जैसे नाबाल मूर्ख है। और नाबाल में जिस प्रकार की मूर्खता है, जिस प्रकार की मूर्खता आपमें है, उसका उद्देश्य शाऊल के चरित्र, आसपास के अध्यायों में शाऊल की मूर्खता, इत्यादि को उजागर करना है। लेकिन जिस बात पर विशेष रूप से जोर दिया गया है, और यह एक वास्तविक बिंदु है जिसके बारे में मैं यहां अध्याय 25 के बारे में सोचता हूं, वह यह है कि डेविड यह स्पष्ट करता है कि प्रभु ने डेविड को रक्तपात से दूर करने के लिए अबीगैल को उसके पास भेजा है, जो उसके मन में था। उसका इरादा नाबाल को नष्ट करने का था।

यह डेविड और शाऊल की हमारी व्याख्या के संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि, तुलना के माध्यम से, यह एक मजबूत सुझाव है कि डेविड ने प्रभु के अभिषिक्त के खिलाफ अपना हाथ उठाने से इनकार कर दिया। उसने इन दो अवसरों पर शाऊल को नष्ट करने से इनकार कर दिया, एक अवसर पर नहीं, बल्कि दो अवसरों पर जब उसके पास ऐसा करने का पूरा अवसर था। और जब उसके आदमियों ने उसे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया, तो उसने ऐसा करने से परहेज किया, जिसमें खुद को और अपने परिवार को दोषी ठहराना, खून का दोष लाना शामिल था, और यह प्रभु ही था जिसने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया।

वास्तव में, यह प्रभु ही था, जो प्रभु के अभिषिक्त के विरुद्ध हाथ न उठाने के दाऊद के निर्णय के पीछे था। वास्तव में, यह प्रभु ही था, जिसने अपनी कृपा से, दाऊद की सहायता की और अवसर मिलने पर दाऊद को शाऊल को मारने से रोका, जिसके परिणामस्वरूप स्वयं और उसके वंशजों, दाऊद के पुत्रों पर खून का दोष आया। तो यह अंतर्संबंध है।

एक और प्रकार, और यह आखिरी वाला है, ठीक है, बिल्कुल आखिरी वाला नहीं, लेकिन लगभग आखिरी वाला जिसका हम उल्लेख करेंगे वह चियास्म है। मैं बस यह सुनिश्चित कर लूं कि मुझसे यहां कुछ भी छूट न जाए। ठीक है।

चियास्म तत्वों की उल्टे क्रम में पुनरावृत्ति है। एबी में, और यदि आपके पास मध्य तत्व है, तो सी, बी प्राइम, ए प्राइम प्रकार का क्रम। एबीबीए या एबीसीबीए।

अब, यह बाइबल में एक बहुत ही सामान्य विशेषता है। यह बहुत लोकप्रिय था। चियास्म प्राचीन विश्व में बहुत लोकप्रिय था।

हम इसे बाइबल में कई बार पाते हैं। इसका उपयोग किया जा सकता है, और इसीलिए हम इसका उल्लेख यहां समग्र रूप से पुस्तक के स्तर पर कर रहे हैं, हालांकि आप इसे आम तौर पर सामग्री की छोटी इकाइयों में पाते हैं, क्योंकि चियास्म को काम करने के लिए, इसे वास्तव में पहचानने योग्य होना चाहिए, और यदि यह बहुत व्यापक सामग्री में फैला हुआ है, तो यह उतना स्पष्ट नहीं होता जितना अन्यथा होता। इसलिए, मैं उदाहरण लेने जा रहा हूँ, हालांकि, जैसा कि मैं कहता हूँ, आप इसे पूरी किताबों में पा सकते हैं।

हम इसका उदाहरण दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, मैं यह नोट करने जा रहा हूँ कि यह छोटी इकाइयों में कहां पाया जा सकता है, और मैंने यहां मैथ्यू 19:30 से 20:16 का उल्लेख किया है। एक बार फिर, मैं आपको याद दिला दूँ कि आपके लिए इन अंशों को अपनी बाइबिल में देखना और ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है कि वे वहां कहां दिखाई देते हैं। अब, मत्ती 19:30 में लिखा है, बहुत से जो पहले हैं, आखिरी होंगे, और जो आखिरी हैं, वे पहले होंगे।

और 20:19, वास्तव में 20:16 में भी हमारा लगभग यही कथन है। तो अंतिम पहले होगा, और पहला आखिरी होगा। बहुत से जो पहले हैं वे आखिरी होंगे, पहले आखिरी होंगे, और आखिरी पहले होंगे। ए, बी, बी, ए. और फिर, 19:30 में, आखिरी पहला होगा, और पहला आखिरी होगा।

ए, बी, बी, ए। अब, ध्यान दें कि यह वास्तव में, इन दो कथनों, 19:30 और 20:16 के बीच, अंगूर के बगीचे में मजदूरों का दृष्टांत है, जहां गृहस्वामी, जो निश्चित रूप से भगवान का प्रतिनिधित्व करता है, जाता है बाज़ार अपने अंगूर के बगीचे के लिए श्रमिकों को सुबह 6 बजे, सुबह 9 बजे, दोपहर को, फिर 3 बजे, और फिर दोपहर को 3 बजे, और फिर काम पर रखता है। फिर दोपहर 5 बजे. और, निस्संदेह, दिन के अंत में, जब वह उन्हें भुगतान करने जाता है, तो वह उन्हें समान राशि का भुगतान करता है। लेकिन साथ ही, इस दृष्टांत के संबंध में यहां अक्सर जो बात छूट जाती है वह यह है कि दिन के अंत में, वह उन लोगों को भी भुगतान करता है जिन्हें पहले काम पर रखा जाता है, और वह उन्हें भी भुगतान करता है जिन्हें सबसे बाद में काम पर रखा जाता है।

तो यह सिद्धांत, पहला अंतिम होगा, और अंतिम पहले होगा, वास्तव में दृष्टांत में ही प्रतिबिंबित होता है, जो चियास्म के अनुसार भी संरचित है क्योंकि दृष्टांत में, आपको पहले काम पर रखा जाना है और फिर अंतिम को। काम पर रखा जाए, इसका संबंध काम पर रखने से है, और फिर भुगतान के संबंध में सबसे पहले काम पर रखा जाना है, सबसे पहले काम पर रखा जाना है, क्षमा करें, पहले काम पर रखा जाना है, हां, मुझे इसे इस तरह से करना चाहिए, आखिरी काम पर रखने वालों को पहले भुगतान किया जाता है, और फिर काम पर रखने वालों को सबसे पहले भुगतान किया जाता है। तो फिर, आपके पास यह एबीबीए है, पहले काम पर रखा जाता है, सबसे बाद में काम पर रखा जाता है, और फिर जो लोग आखिरी में काम पर रखे जाते हैं उन्हें पहले भुगतान किया जाता है, और जो पहले काम पर रखे जाते हैं उन्हें सबसे बाद में भुगतान किया जाता है। पहला आखिरी होगा, और आखिरी पहला होगा।

वैसे, ध्यान दें कि 1930 और 2016 के संदर्भ में, आपके पास चियास्म के भीतर एक चियास्म है। ध्यान दें कि पहले अंतिम होगा, और अंतिम पहले होगा, और फिर अंतिम पहले होगा, और पहला अंतिम होगा, एबीबी प्राइम, ए प्राइम यहां भी। तो, इस परिच्छेद में आपके पास चियास्म पर चियास्म है।

और, निःसंदेह, यह सब विरोधाभास के पूरे तत्व को उजागर करने के लिए है और इस बात को स्पष्ट करने के लिए है कि ईश्वर की न्याय, अधिकार की समझ, न्याय के विशिष्ट मानवीय अंशांकन से भिन्न है। निःसंदेह, यह उन लोगों के लिए उचित लगता है जिन्हें पहले काम पर रखा जाता है और जो वास्तव में दिन में 12 घंटे काम करते हैं, न केवल उन लोगों की तुलना में अधिक भुगतान किया जाता है जिन्हें शाम पांच बजे काम पर रखा जाता है और केवल एक घंटा काम करते हैं। दिन की गर्मी, शाम की ठंडक, उनके लिए उससे अधिक पाने के लिए, लेकिन उन लोगों के लिए भी जिन्हें पहले काम पर रखा गया है उन्हें पहले वेतन दिया जाएगा, और जिन्हें बाद में काम पर रखा गया है उन्हें सबसे बाद में भुगतान किया जाएगा। लेकिन यहां उम्मीदों से उलट है।

तो, निःसंदेह, मुद्दा यह है कि न्याय के बारे में भगवान की समझ न्याय को समझने के सामान्य मानवीय तरीकों से भिन्न है। ठीक है। फिर हम inclusio का उल्लेख करेंगे, और यह इनमें से अंतिम होगा जिसके बारे में हम बात करेंगे।

इनक्लूसियो में एक इकाई के आरंभ और अंत में एक ही शब्द या वाक्यांश की पुनरावृत्ति शामिल होती है, जो वास्तव में एक ब्रेकेट प्रभाव पैदा करती है। जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, पुस्तक में व्यक्तिगत भजन, स्तोत्र में, एक अर्थ में, उनकी अपनी व्यक्तिगत छोटी पुस्तकों के रूप में कार्य करते हैं। बेशक, वे मूल रूप से स्वतंत्र थे।

वे स्वतंत्र रूप से रचित थे, इस तरह की बात। तो आप वास्तव में पुस्तक सर्वेक्षण में क्या शामिल है, इसका वर्णन करने के लिए भजनों का उपयोग कर सकते हैं। अब, आइए यहां समावेशन के संबंध में भजन 106 को देखें।

दरअसल, 104 स्तोत्र बेहतर है। 104 स्तोत्र, हे मेरे प्राण, प्रभु को आशीर्वाद दे। भजन की शुरुआत इस आग्रह, हे मेरे प्राण, प्रभु को आशीर्वाद देने के इस उपदेश से होती है।

श्लोक एक में, श्लोक 35, भजन का अंतिम श्लोक, हे मेरे प्राण, प्रभु को आशीर्वाद दे। अब, जब आपके पास इस प्रकार का समावेश हो तो हमें यहां इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि हस्तक्षेप करने वाली सामग्री ब्रेकेटिंग छंदों से कैसे संबंधित है। यहां, श्लोक दो से 34 किस प्रकार श्लोक एक से संबंधित हैं, हे मेरी आत्मा, प्रभु को आशीर्वाद दो, और श्लोक 35, हे मेरी आत्मा, प्रभु को आशीर्वाद दो।

मूल रूप से, आपके पास छंदों में क्या है, जैसा कि आप इसे पढ़ने पर देखेंगे, श्लोक दो से 34 तक में वे कारण हैं जिनके लिए हमें प्रभु को आशीर्वाद देना चाहिए। यहाँ, फिर, आपके पास पुष्टि है। हे मेरी आत्मा, प्रभु को उसके शक्तिशाली, दयालु कार्यों के कारण आशीर्वाद दो, जो प्रकट करते हैं कि वह आशीर्वाद पाने के योग्य है। फिर, निःसंदेह, कारण उसके शक्तिशाली, दयालु

कार्यों के कारण होता है जो धन्य होने की उसकी योग्यता को व्यक्त करते हैं। इसलिए, हे मेरी आत्मा, प्रभु को आशीर्वाद दो।

समावेशन द्वारा पुष्टि और कारण के अनुसार संरचित किया गया है। समावेश वास्तव में आपके यहां मौजूद औचित्य और कारण को पुष्टि और मजबूत करता है। अब, इनक्लूसियो वास्तव में संपूर्ण इकाई की प्राथमिक चिंता को इंगित करने के लिए कार्य करता है, इस मामले में, एक भजन या एक किताब, ब्रैकेट के माध्यम से संपूर्ण इकाई की।

तो, यहां चिंता का विषय लेखक की ओर से पाठक से अपने अस्तित्व की गहराई से भगवान के निरंतर आशीर्वाद का जीवन जीने का आग्रह करना है। आत्मा को आशीर्वाद दें, हे मेरे प्रभु। वास्तव में यही इस स्तोत्र का बोझ है। और फिर, निस्संदेह, प्रेरणा या कारण और क्यों, वास्तव में, हमें अपने जीवन को इस तरह व्यवस्थित करना चाहिए।

अब, प्रमुख संरचनात्मक संबंधों के संबंध में कुछ अतिरिक्त नोट्स। वास्तव में एक प्रमुख रिश्ते के लिए, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, सामग्री के बड़े हिस्से को नियंत्रित करने की आवश्यकता है, पुस्तक की आधे से अधिक सामग्री जिसका सर्वेक्षण किया जा रहा है। और यह मददगार है अगर यह विशिष्ट है, तो, कहने का तात्पर्य यह है कि, ऐसी चीज़ जो वास्तव में अर्थ रखती है।

हालाँकि, हम अंतर्निहित बनाम स्पष्ट संबंधों के बीच भी अंतर कर सकते हैं। एक अंतर्निहित संबंध, एक स्पष्ट संबंध वह है जिसमें आपका एक चिह्न स्पष्ट रूप से मौजूद होता है। उदाहरण के लिए, हमने देखा कि जब भी आपके पास कोई शब्द होता है, तो आप जानते हैं कि आपके पास विरोधाभास है।

और जब भी आपके पास शब्द होता है, तो आप जानते हैं कि आपके पास कारण है। लेकिन ऐसा होगा, वे स्पष्ट रिश्ते होंगे। लेकिन आप विरोधाभास तभी पा सकते हैं जब कोई शब्द न हो लेकिन स्पष्ट रूप से मौजूद हो।

और जब शब्द स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं होता है तो आप कार्य-कारण का निर्धारण कर सकते हैं। ऐसे मामलों में, संबंध स्पष्ट होने के बजाय अंतर्निहित होता है। और फिर हम सरल और जटिल रिश्तों के बीच भी अंतर कर सकते हैं।

एक साधारण रिश्ता स्वयं द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक रिश्ता है। मान लीजिए कारण-कारण। लेकिन हम देखते हैं कि कभी-कभी दो या दो से अधिक संरचनात्मक रिश्ते एक किताब के भीतर काम करने के तरीके के संदर्भ में एक साथ इतने बंधे होते हैं कि आप किसी दूसरे के बारे में बात किए बिना यह वर्णन नहीं कर सकते कि इस किताब के भीतर एक रिश्ता कैसे काम करता है।

वे इस तरह से बहुत करीब से बंधे हुए हैं। जब ऐसा मामला हो, तो उन्हें एक जटिल रिश्ते में जोड़ना मददगार होता है। और हमने इसे कुछ उदाहरणों में देखा।

उदाहरण के लिए, हमने नीतिवचन में बार-बार ज्ञान और मूर्खता या मूर्खता के बीच विरोधाभास की पुनरावृत्ति का उल्लेख किया है। आप देखिए, आप पुनरावृत्ति के बारे में बात किए बिना नीतिवचन में विरोधाभास के बारे में बात नहीं कर सकते क्योंकि विरोधाभास बार-बार आता है। और आप विरोधाभास लाए बिना नीतिवचन में पुनरावृत्ति के बारे में बात नहीं कर सकते।

आप यह वर्णन नहीं कर सकते कि उनमें से एक रिश्ता दूसरे के बारे में बात किए बिना कैसे काम करता है। और इसलिए, उन्हें संयोजित करना वास्तव में सहायक है क्योंकि लेखक ने स्वयं उन्हें संयोजित किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि, वे कार्यक्रम और पुस्तक की गतिशीलता में ही संयुक्त हैं।

और फिर, हम सामान्य बनाम विशिष्ट संबंधों के बीच भी अंतर कर सकते हैं। कुछ रिश्ते दूसरों की तुलना में अधिक सामान्य होते हैं और अधिक विशिष्ट रिश्तों में अंतर्निहित होते हैं। उदाहरण के लिए, हमने उल्लेख किया है कि निर्णायकता के भीतर निहित कार्य-कारण की पुनरावृत्ति है।

जब आपको धुरी के कारण आमूल-चूल उलटफेर की यह धारणा होती है, तो धुरी से पहले की सामग्री एक धुरी का कारण बनती है। लेकिन विशेष रूप से, धुरी मार्ग से लेकर उसके बाद आने वाले मार्ग तक एक कारण होता है। और, निःसंदेह, जो धुरी से पहले आता है और जो धुरी के बाद आता है, उसके बीच एक मौलिक विरोधाभास है क्योंकि जो धुरी के बाद आता है वह धुरी से पहले आने वाले को नष्ट कर देता है।

तो वह निर्णायकता कार्य-कारण और विरोधाभास की पुनरावृत्ति का एक अधिक विशिष्ट रूप है। लेकिन जब आपके पास कार्य-कारण और विरोधाभास की इस तरह की पुनरावृत्ति होती है, तो वास्तव में इसे निर्णायकता का लेबल देना अधिक सटीक होता है। वास्तव में क्या चल रहा है, इसका अवलोकन करने का यह अधिक सटीक तरीका है।

और इसलिए हम सोचते हैं कि यहां सबसे सटीक विशिष्ट संबंध की पहचान करने का प्रयास करना हमेशा उपयोगी होता है। हम चेतन और अवचेतन संबंधों के बीच भी अंतर कर सकते हैं। कुछ रिश्तों को लेखक ने सचेत रूप से नियोजित किया था।

अन्य लोग अवचेतन रूप से। उदाहरण के लिए, कोई एस्तेर की पुस्तक में आपके पास मौजूद निर्णायकता के संबंध में पूछ सकता है, क्या एस्तेर की पुस्तक के लेखक ने संरचनात्मक संबंधों की अपनी सूची के साथ बैठकर कहा था, ठीक है, मुझे लगता है कि मैं जा रहा हूँ, मैं देखिए यहां निर्णायकता है। मुझे लगता है कि मैं अपनी पुस्तक की संरचना के लिए निर्णायकता का उपयोग करने जा रहा हूँ।

इसकी संभावना नहीं है कि उसने ऐसा किया हो। फिर भी, मुद्दा, तथ्य यह है कि यह सोचने का हर कारण है कि एस्तेर की पुस्तक के लेखक ने गंभीरता से विचार किया था कि जिस संदेश को उसे संप्रेषित करना था उसे सर्वोत्तम तरीके से कैसे संप्रेषित किया जाए। और उन्होंने अपने संदेश को संप्रेषित करने के साधन के रूप में एक धुरी के कारण इस क्रांतिकारी उलटफेर का उपयोग करना चुना।

इसलिए, यद्यपि उन्होंने सचेत रूप से, शायद जानबूझकर नहीं, निर्णायकता का उपयोग करने का इरादा किया था, उन्होंने इस बात पर विचार किया कि उन्हें जो संप्रेषित करना था उसे सर्वोत्तम तरीके से कैसे संप्रेषित किया जाए और उन्होंने इस संरचनात्मक व्यवस्था का उपयोग करने के लिए इस फॉर्म का उपयोग करने का निर्णय लिया। ऐसा करो। हालाँकि, इसके अलावा, हम जानते हैं कि प्राचीन दुनिया संचार के मामलों से बहुत अधिक प्रभावित थी। शिक्षा, और निश्चित रूप से बहुत सारी शिक्षा अनौपचारिक थी, लेकिन प्राचीन दुनिया में अनौपचारिक और औपचारिक शिक्षा दोनों ही काफी हद तक अलंकारिक थी।

यह मुख्य रूप से संचार के तरीकों और तौर-तरीकों, प्रथाओं पर केंद्रित था। हम जानते हैं कि 21वीं सदी के ग्रीको-रोमन विश्व में शिक्षा के संबंध में यही स्थिति थी। उदाहरण के लिए, अरस्तू ने लिखा है, काव्यशास्त्र पर एक पूरी किताब लिखी है जिसमें वह तुलना और विरोधाभास सहित कई संरचनात्मक संबंधों के बारे में विस्तार से बात करता है, जिसे अरस्तू सिंक्रोसिस और इसी तरह के रूप में संदर्भित करता है।

तो, यह बहुत अच्छी तरह से हो सकता है कि वास्तव में इनमें से कुछ लेखकों ने जानबूझकर इन संरचनात्मक संबंधों का उपयोग किया था, लेकिन क्योंकि हम वास्तव में इसके बारे में उतने अनभिज्ञ नहीं हैं, हम वास्तव में प्राचीन, प्राचीन लोगों की तरह संचार के तरीकों और साधनों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं। थे, हम उन्हें हल्के में लेते हैं। हो सकता है कि हम इस प्रकार की संरचनात्मक विशेषताओं के प्रति उस प्रकार की जानबूझकर उपेक्षा कर रहे हों जो उन्होंने दी है। लेकिन अगर ऐसा है, तो उससे भी आगे, हमें इस बात पर विचार करना होगा कि जिस प्रकार के संरचनात्मक संबंधों के बारे में हम बात कर रहे हैं वे वास्तव में मानव मन और मानव संचार के भीतर अंतर्निहित हैं।

वे सभी भाषाओं में, सभी संस्कृतियों में, हर समय में और वास्तव में, कला के सभी रूपों में पाए जाते हैं, न केवल साहित्य जैसे मौखिक संचार में, बल्कि अधिकांश भाग में, वे भी पाए जाते हैं। कला के अन्य रूपों में, जैसे संगीत, वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, और इसी तरह। वास्तव में, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन आंदोलन पहली बार एक निबंध के माध्यम से इस प्रकार की गतिशीलता से परिचित हुआ, जॉन रस्किन का एक बहुत प्रसिद्ध निबंध, जिसे रचना पर निबंध कहा जाता है, जिसमें रस्किन ने तर्क दिया कि इनमें से कई जिनके बारे में हम बात कर रहे हैं के बारे में प्रकृति में ही पाए जाते हैं। हमें लगता है कि यह कहना शायद थोड़ा अधिक सटीक होगा कि इसका संबंध मानव मस्तिष्क की संरचना से है, इसलिए इस प्रकार के संरचनात्मक संबंधों का उपयोग किए बिना संचार, कला वास्तव में असंभव प्रतीत होती है।

अब, मामले की सच्चाई यह है कि, हम उनका उपयोग हर समय करते हैं, संचार में और संचार की व्याख्या करने में, लेकिन व्याकरणिक संरचनाओं, विषय, विधेय, विशेषण, इस तरह की सभी चीजों की तरह, हम उन्हें रोकते नहीं हैं और उनका विश्लेषण नहीं करते हैं। हमें नहीं करना है। फिर भी, वे हमारे विचार की प्रक्रियाओं में अंतर्निहित हैं, और जब बहुत महत्वपूर्ण संचार की गहरी, विशिष्ट, सावधानीपूर्वक व्याख्या की बात आती है, तो यह सहायक होता है, जैसे हम व्याकरणिक विश्लेषण के साथ करते हैं, वैसे ही साहित्यिक संरचनात्मक विश्लेषण के संबंध में भी, यह सहायक है। रुकना और वास्तव में इस बारे में सोचना उपयोगी है कि जो कहा जा रहा है

उसे अधिक पूर्ण, अधिक सटीक, अधिक विशिष्ट रूप से समझने के तरीके के रूप में यह कैसे कहा जा रहा है।

फिर, आप रूप और संरचना पर ध्यान देकर और उस पर ध्यान देकर सामग्री को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। अब, प्रमुख संरचनात्मक संबंधों की पहचान क्यों करें? खैर, एक बात के लिए, निश्चित रूप से, यह पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण अंशों और सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों या अवधारणाओं की पहचान करने में मदद करता है, इसलिए जब व्याख्या की बात आती है तो यह काफी महत्वपूर्ण, प्रासंगिक और व्यावहारिक है, और यह हमें यह पहचानने में भी मदद करता है कि कैसे पुस्तक के अलग-अलग तत्व एक-दूसरे से, पुस्तक की योजना और विचार के अन्य व्यक्तिगत तत्वों से संबंधित हैं। यह वास्तव में इन संरचनात्मक संबंधों के माध्यम से है। अन्यथा, हम उन्हें पुस्तक के भीतर संगठनात्मक प्रणालियाँ कह सकते हैं; इनके माध्यम से ही लेखक अर्थ का संचार करता है, और जब व्याख्या की बात आती है तो ये बहुत महत्वपूर्ण होंगे।

अब, इसीलिए हम कहते हैं कि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह व्यक्तिगत अंशों और संपूर्ण पुस्तक की विशिष्ट और सटीक व्याख्या में सीधे सहायता करता है, और यह इसे दो तरीकों से करता है। एक बात, यह प्रश्न पूछने के लिए आधार के रूप में कार्य करता है। हम इन संरचनात्मक संबंधों के प्रश्न उठाते हैं, और ये प्रश्न व्याख्या के लिए एक पुल के रूप में काम करेंगे।

संरचना के तहत उठाए गए प्रश्नों का उत्तर देकर ही हम वास्तव में पुस्तक की व्याख्या करेंगे, और वे व्यक्तिगत अंशों और संपूर्ण पुस्तक दोनों की व्याख्या करने के लिए एक प्रकार के साक्ष्य के रूप में काम करेंगे। फिर, सर्वेक्षण में हम जो कुछ भी देखते हैं, हम व्याख्या के लिए करते हैं। जब व्याख्या की बात आती है तो हम इस पर वापस आएंगे और इसका उपयोग करेंगे, इसका सकारात्मक उपयोग करेंगे।

अब, जैसा कि हमने बताया, सभी बाइबिल व्याख्याएँ संरचना पर सावधानीपूर्वक ध्यान देती हैं, या कम से कम संरचना पर कुछ ध्यान देती हैं। वे सभी इसके बारे में बात करते हैं। आईबीएस इस मायने में अद्वितीय है कि यह संरचनात्मक विशेषताओं को लेबल करने और व्याख्या के लिए उनके महत्व पर विचार करने में अधिक जानबूझकर और विश्लेषणात्मक होता है।

फिर, आईबीएस ऐसा कुछ भी नहीं कर रहा है जो अन्यथा नहीं किया गया है, लेकिन सामान्य रूप से व्याख्या के मामले में यह कुछ हद तक अधिक पद्धतिगत रूप से चिंतनशील और जानबूझकर है। अब, हमने सामान्य और विशिष्ट सामग्रियों की पहचान करने वाले पुस्तक सर्वेक्षण के बारे में बात की है। हमने संरचना की पहचान करने, मुख्य इकाइयों और उपइकाइयों पर ध्यान देने और संपूर्ण पुस्तक में प्रमुख संरचनात्मक संबंधों पर ध्यान देने के महत्व के बारे में भी बात की है।

पुस्तक सर्वेक्षण में हम जिस तीसरी बात का उल्लेख करना चाहते हैं, वह हमारे द्वारा पहचाने गए संरचनात्मक संबंधों की ओर निर्देशित प्रश्न, व्याख्यात्मक प्रश्न उठाने से संबंधित है। मूलतः तीन

प्रकार के प्रश्न हैं जिन्हें हम उठाना चाहते हैं। पहला एक निश्चित प्रश्न है, जो मूलतः यह है कि यहाँ क्या है और जो यहाँ है उसका क्या अर्थ है।

अंतिम प्रश्न मूलतः यह है कि इसका अर्थ क्या है। अब, कभी-कभी इसे एक मॉडल प्रश्न के रूप में कहा जा सकता है: कैसे? उदाहरण के लिए, ये दोनों चीज़ें किस प्रकार भिन्न हैं? लेकिन यह जानने का एक और तरीका है कि इसका अर्थ क्या है।

तर्कसंगत प्रश्न मूलतः क्यों प्रश्न है। यह यहाँ क्यों है? किसी लेखक ने इसका प्रयोग क्यों किया है? ऐसा क्यों कहा या किया गया, उद्देश्य या कारण? और तीसरे प्रकार का प्रश्न निहितार्थ प्रश्न है। निश्चित एवं तर्कसंगत प्रश्नों के उत्तरों के निहितार्थ क्या हैं? अब, निहितार्थ वास्तव में तार्किक धारणाओं या वृद्धि से संबंधित हैं।

दूसरे शब्दों में, लेखक ने जो संप्रेषित किया है उसे संप्रेषित करने के लिए हमने निश्चित और तर्कसंगत प्रश्नों के अपने उत्तरों के माध्यम से जो सुनिश्चित किया है, उसे संप्रेषित करने के लिए लेखक को क्या मानना चाहिए? उसके संचार के पीछे किस प्रकार की धारणाएँ छिपी हुई हैं? यदि वह वास्तव में उस पर विश्वास करता है जो वह यहां बता रहा है, जिसे हम निश्चित और तर्कसंगत प्रश्नों के उत्तर के माध्यम से समझ रहे हैं, तो उसे क्या मानना चाहिए? यह एक प्रकार का निहितार्थ है। एक अन्य प्रकार के निहितार्थ में प्राकृतिक वृद्धि शामिल होगी। यदि लेखक वास्तव में इस पर विश्वास करता है, तो इससे अनिवार्य रूप से क्या निकलता है? उसे अन्य किन बातों पर भी विश्वास करना चाहिए? उन्होंने यहां जो प्रस्तुत किया है उसके आवश्यक तार्किक परिणाम क्या हैं? अब, इस बिंदु पर, मैं वास्तव में इंडक्टिव बाइबल स्टडी पुस्तक के एक अंश का संदर्भ देने जा रहा हूँ, जहां मैं उत्पत्ति 1.1 के निहितार्थों के बारे में बात करके स्पष्ट करता हूँ कि हमारे मन में क्या है। इसमें स्पष्ट रूप से एक संरचनात्मक संबंध के निहितार्थ शामिल नहीं हैं, लेकिन इसमें एक बयान के निहितार्थ शामिल हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि हमारे मन में निहितार्थों के माध्यम से क्या है, दोनों धारणाएँ जो एक दावे के पीछे निहित हैं और साथ ही एक दावे के आवश्यक तार्किक परिणाम भी हैं।

मुझे उत्पत्ति 1:1 उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं है। आपके लिए, लेकिन मैं करूँगा। आरंभ में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की। ठीक है।

लेखक को यह विश्वास करने या दावा करने के लिए कि ईश्वर ने शुरुआत में आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया, उसे क्या मानना चाहिए? उस दावे के पीछे क्या धारणाएँ छिपी हैं? खैर, एक धारणा यह है कि ईश्वर का अस्तित्व है। आरंभ में, भगवान. बाइबल में कहीं भी ईश्वर के अस्तित्व के लिए किसी प्रकार का दार्शनिक तर्क नहीं है।

आपकी यह धारणा है कि ईश्वर एक निर्माता के रूप में ईश्वर के कार्य के आधार पर अस्तित्व में है। यह दावा कि ईश्वर ने बनाया है, ईश्वर के अस्तित्व को दर्शाता है या मानता है। साथ ही, शुरुआत में, ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की, जिसका अर्थ यह था कि ईश्वर सृष्टि से अलग है, जो संयोग से यहूदी-ईसाई परंपरा के महान दावों में से एक है।

संभवतः, यह कहना सही है कि यहूदी-ईसाई परंपरा के बाद से, इस्लाम एक अर्थ में यहूदी-ईसाई परंपरा से संबंधित है। ऐतिहासिक रूप से, वास्तव में, यह संभव है कि इस्लाम यहूदी-ईसाई विधर्म और इसी तरह के अन्य धर्मों से उभरा, लेकिन दुनिया के महान धर्मों में से, वास्तव में केवल यहूदी-ईसाई धर्म और शायद इसके साथ इस्लाम वास्तव में इस धारणा को गंभीरता से लेता है। वह ईश्वर सृष्टि से भिन्न है। लेकिन यह उत्पत्ति 1:1 में एक निहित धारणा है कि ईश्वर सृष्टि से भिन्न है।

इसके अलावा, शुरुआत में, भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया, यह सुझाव देते हुए कि भगवान स्वतंत्र हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर सृष्टि के भीतर किसी भी चीज़ से विवश नहीं है। ऐसा मान लिया गया है।

यह भी माना जाता है कि ईश्वर सृष्टि के साथ पहले से मौजूद है। वह सृष्टि के साथ सह-अस्तित्व में नहीं है। वह सृष्टि के साथ पहले से विद्यमान है।

वह अन्तर्निहित है। इस वाक्यांश में यह माना गया है, शुरुआत में, भगवान ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया। साथ ही, उसे यह कहने के लिए कि शुरुआत में, भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया, उसे यह मान लेना चाहिए कि भगवान शक्तिशाली है, कि भगवान बुद्धिमान है, कि भगवान उद्देश्यपूर्ण है, और यह कि भगवान सक्रिय है।

ये सभी बातें उस कथन के भीतर अंतर्निहित रूप से मौजूद हैं। अब, ये धारणाएँ हैं, लेकिन उत्पत्ति 1:1 से प्राकृतिक परिणाम भी हैं। एक यह है कि यदि, वास्तव में, शुरुआत में, भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया, तो इसका मतलब यह है कि भगवान से अपनी रचना की भलाई के लिए चिंतित होने की उम्मीद की जाएगी। यदि ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाने में परेशानी उठाई, तो इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर ने जो रचना की है उसकी भलाई के लिए चिंतित होंगे।

वह उससे बहता है। साथ ही, ईश्वर को अपनी सृष्टि पर पूर्ण विशेषाधिकार प्राप्त है, जिसमें उसे नष्ट करने या उसका न्याय करने का विशेषाधिकार भी शामिल है। निःसंदेह, यह थियोडिसी के सदियों पुराने मुद्दे, ईश्वर के औचित्य से संबंधित है, उदाहरण के लिए, ईश्वर दुनिया में क्या करता है, ईश्वर दर्द और पीड़ा आदि की अनुमति देता है।

बाइबल जो उत्तर देती है, उनमें से एक, जो उत्पत्ति 1.1 में निहित है, वह यह है कि, एक अर्थ में, ईश्वर को स्वयं को उचित ठहराने की आवश्यकता नहीं है। तथ्य यह है कि शुरुआत में, उसने आकाश और पृथ्वी को बनाया, इसका मतलब है कि उसके पास स्वर्ग और पृथ्वी पर, स्वर्ग और पृथ्वी पर विशेषाधिकार है, जिसमें इसका न्याय करने और इसे नष्ट करने का विशेषाधिकार भी शामिल है, और उसके पास नहीं है किसी को जवाब देने के लिए। साथ ही, इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर को अपनी रचना पर माँग करने का अधिकार है।

इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर के पास अपनी रचना को बनाए रखने की शक्ति है। इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर के पास उस सृष्टि की नियति को नियंत्रित करने की शक्ति है जिसे उसने बनाया है

और यदि मरम्मत आवश्यक हो तो उसके पास सृष्टि को छुड़ाने या मरम्मत करने की भी शक्ति है। मैं यहां पुस्तक को श्रेय देना चाहता हूं।

यह हमारी पुस्तक के पृष्ठ 134 पर पाया गया है। अब, मुझे लगता है कि यह याद रखना महत्वपूर्ण है, मुझे लगता है कि, एक बात के लिए, इन प्रश्नों को निश्चित, तर्कसंगत और निहितार्थ वाले क्रम में पूछना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये तीन प्रश्न एक-दूसरे पर आधारित हैं। तर्कसंगत प्रश्न निश्चित प्रश्न पर आधारित होता है।

दूसरे शब्दों में, इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले कि यह यहाँ क्यों है, आपको वास्तव में इसका उत्तर देना होगा कि यहाँ क्या है इसका क्या अर्थ है? और स्पष्ट रूप से, निहितार्थ प्रश्न निश्चित और तर्कसंगत प्रश्नों पर आधारित होता है, जिसमें इसमें निश्चित और तर्कसंगत प्रश्नों के उत्तरों के निहितार्थ शामिल होते हैं। अब, इस बिंदु पर, हम वास्तव में इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देते हैं। यह अवलोकन है।

प्रश्नों का उत्तर देना वास्तव में व्याख्या का कार्य है। इस बिंदु पर, हम केवल प्रश्न उठा रहे हैं जो बाद में हमारे व्याख्या कार्य का आधार बनेंगे। अब, मेरे द्वारा बताए गए ये निहितार्थ व्यावहारिक होने के बजाय व्याख्यात्मक हैं।

ये लागू करने योग्य प्रश्न नहीं हैं। यह इस बात का विषय नहीं है कि इसका क्या तात्पर्य है कि यह हम पर कैसे लागू हो सकता है, लेकिन इसमें वास्तव में सामान्यतः धार्मिक निहितार्थ शामिल होते हैं। जैसा कि मैं कहता हूं, यदि यह सत्य है, तो यह आवश्यक रूप से धर्मशास्त्रीय रूप से इसका अनुसरण करता है।

संयोग से, यह बहुत दिलचस्प है, और यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि एक अनुच्छेद का तात्पर्य उसके अर्थ का उतना ही हिस्सा है जितना वह स्पष्ट रूप से बताता है। इसीलिए मैं कहता हूं कि यह कोई लागू करने वाला प्रश्न नहीं है। यह एक व्याख्यात्मक प्रश्न है।

एक अनुच्छेद जो दर्शाता है वह उसके अर्थ का उतना ही हिस्सा है जितना वह स्पष्ट रूप से बताता है। और इसलिए, इसीलिए हमें हमेशा, कम से कम पूछने के लिए, निहितार्थ के प्रश्न पर ध्यान देना चाहिए। इसके अलावा, और मैंने बताया कि ये सहायक प्रश्न वास्तव में निश्चित प्रश्न के अधिक विशिष्ट रूप हैं, यह महत्वपूर्ण है कि प्रश्नों को किए गए अवलोकन की ओर निर्देशित किया जाए, कि प्रश्न सटीक और सामान्य हों, यानी कि वे एक विशिष्ट तरीके से संरचनात्मक को संबोधित करते हैं संबंध को पुस्तक में नियोजित किया गया है, और वे सतही के विरुद्ध रचनात्मक और मर्मज्ञ हैं।

और, निःसंदेह, ये ऐसे कौशल हैं जो समय के साथ विकसित होते हैं क्योंकि हम प्रश्न उठाने में अभ्यास द्वारा कौशल हासिल करते हैं। हमने पहले ही उल्लेख किया है कि पुस्तक सर्वेक्षण में प्रश्न उठाने का उद्देश्य, संपूर्ण पुस्तक की व्याख्या के निष्कर्ष पर, या कम से कम पुस्तक के भीतर कई महत्वपूर्ण अंशों में, इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है ताकि संदेश को संश्लेषित किया जा सके। पुस्तक। अधिकांश पुस्तकों के लिए, विशेष रूप से किसी भी आकार की पुस्तक के लिए,

पुस्तक सर्वेक्षण और पुस्तक सर्वेक्षण में आपके द्वारा उठाए गए प्रश्नों से सीधे इन प्रश्नों का उत्तर देना कठिन होगा।

लेकिन जब आप किसी पुस्तक के अंशों की व्याख्या पर काम करते हैं, तो आप वापस आ सकते हैं और संश्लेषण के माध्यम से, पुस्तक सर्वेक्षण के बिंदु पर उठाए गए इन प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। दरअसल, यहां मदरसा में, मैं अक्सर इसी तरह से पाठ्यक्रमों का प्रबंधन करता हूं। उदाहरण के लिए, अधिनियमों की पुस्तक पर मेरे पाठ्यक्रम में, हम एक कक्षा के रूप में अधिनियमों की पुस्तक में अंशों की व्याख्या के माध्यम से काम करते हैं, और फिर अंतिम असाइनमेंट छात्रों के लिए वापस आना और प्रश्नों के एक सेट का उत्तर देना है जो वे एक के तहत उठाते हैं। अधिनियमों की संपूर्ण पुस्तक के संदेश को संश्लेषित करने के एक तरीके के रूप में प्रमुख संरचनात्मक संबंधों की।

पुस्तक सर्वेक्षण में प्रश्न उठाने का एक उद्देश्य यह भी है। हालाँकि, छोटी किताबों में, आमतौर पर चार अध्याय या उससे कम की किताबें, ये प्रश्न किताब की तुरंत व्याख्या करने के साधन के रूप में काम कर सकते हैं। यदि पुस्तक काफी छोटी है, तो आप पुस्तक के संदेश को समझने और शुरुआत में ही पुस्तक की व्याख्या करने के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं।

बोधगम्य और मर्मज्ञ प्रश्न पूछने से ही देखे गए संरचनात्मक संबंधों की अंतर्दृष्टि और स्पष्टीकरण मिल सकता है। शैक्षिक सिद्धांतकार इसे मेटाकॉग्निशन कहते हैं। किसी अवलोकन के बारे में प्रश्न पूछने की प्रक्रिया में, आप वास्तव में उस अवलोकन के उन पहलुओं या आयामों को समझते हैं जो अन्यथा आप चूक सकते हैं।

फिर, निःसंदेह, यहां हमने उस बारे में बात की जिसका मैंने अभी निहितार्थ के संदर्भ में उल्लेख किया है। पुस्तक के सर्वेक्षण में सबसे पहली चीज़ जो हम करते हैं वह है प्रमुख छंदों या रणनीतिक क्षेत्रों की पहचान करना। दूसरे शब्दों में, पुस्तक के अंश, पुस्तक के वे कौन से अंश हैं जो प्रमुख संरचनात्मक संबंधों का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस प्रकार समग्र रूप से पुस्तक में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं? अब, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि हम सभी, जब हम बाइबिल की किताब के साथ काम करते हैं, तो वास्तव में कुछ अंशों को दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं, प्रमुख अंश या रणनीतिक अंश मानते हैं।

हमारा मानना है कि आगमनात्मक दृष्टिकोण में, पुस्तक की गतिशीलता के लिए यह निर्धारित करना महत्वपूर्ण है कि पुस्तक में प्रमुख मार्ग, रणनीतिक मार्ग क्या हैं। और जिस तरह से पुस्तक हमारे लिए ऐसा करती है वह प्रमुख संरचनात्मक संबंधों के माध्यम से प्रमुख अंशों या रणनीतिक क्षेत्रों को सामने रखना है। दूसरे शब्दों में, हमें वापस जाना चाहिए और खुद से पूछना चाहिए कि कौन सा संक्षिप्त अंश मेरे द्वारा देखे गए प्रत्येक प्रमुख संरचनात्मक संबंध का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है।

और वह होगा, वे पुस्तक के भीतर आपके मुख्य अंश होंगे। और मुझे लगता है कि प्रतिनिधित्व किए गए संरचनात्मक संबंधों के संदर्भ में कारण बताना वास्तव में सहायक है। इसलिए,

उदाहरण के लिए, आप कह सकते हैं, 1-1 एक मुख्य अनुच्छेद है क्योंकि यह विशिष्टीकरण आदि का प्रतिनिधित्व करता है।

फिर, संरचनात्मक संबंधों को प्रमुख अनुच्छेदों या रणनीतिक क्षेत्रों को निर्धारित करने या इंगित करने की अनुमति देकर, आप वास्तव में पुस्तक, कार्यक्रम और पुस्तक के भीतर की गतिशीलता को यह निर्धारित करने की अनुमति दे रहे हैं कि पुस्तक के भीतर सबसे महत्वपूर्ण अंश कौन से हैं, पुस्तक के प्रमुख अंश या रणनीतिक क्षेत्र। अब, मुझे लगता है, इन प्रमुख छंदों या रणनीतिक क्षेत्रों को उनके दायरे में कम संख्या में रखना मददगार है। आप ऐसा नहीं करते क्योंकि वे रणनीतिक हैं, क्योंकि वे प्रमुख मार्ग हैं; आप नहीं चाहेंगे कि पुस्तक का बड़ा भाग उनके अंतर्गत समाहित हो जाए।

वे संक्षिप्त और कम संख्या में होने के लिए हैं क्योंकि उन्हें संक्षिप्त और कम रखने से उन्हें प्रबंधनीय बनाया जा सकेगा। दूसरे शब्दों में, यह वास्तव में हमें इन प्रमुख अंशों पर ध्यान केंद्रित करने और उन्हें मुख्य अंशों के रूप में उपयोग करने में मदद करेगा जो समग्र रूप से पुस्तक में प्रवेश प्रदान करेगा। अब, कुछ संरचनात्मक संबंध, निश्चित रूप से, आपको मुख्य मार्ग और रणनीतिक क्षेत्रों की ओर अधिक सीधे इंगित करते हैं, जैसे कि यदि आपके पास, उदाहरण के लिए, यदि आपके पास चरमोत्कर्ष है, तो स्पष्ट रूप से चरमोत्कर्ष मार्ग चरमोत्कर्ष के संरचनात्मक संबंध का प्रतिनिधित्व करेगा।

या यदि आपके पास निर्णायकता है, तो स्पष्ट रूप से धुरी मार्ग निर्णायकता का प्रतिनिधित्व करेगा। लेकिन अन्य संरचनात्मक संबंधों को पहचानना अधिक कठिन हो जाता है, और आपको उस प्रमुख पद या रणनीतिक क्षेत्र की पहचान करने के लिए थोड़ी अधिक मेहनत करनी होगी जो उस रिश्ते द्वारा दर्शाया जा सकता है। इसका एक उदाहरण पुनरावृत्ति होगा, जो पूरी किताब में समान या समान चीजों की पुनरावृत्ति है, इस मामले में आपको खुद से पूछना होगा कि पुनरावृत्ति की कौन सी घटना इस पुनरावृत्ति का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करती है।

यह पहला हो सकता है, या यह कहने के निर्णय में कई बातें शामिल हो सकती हैं कि यह विशेष घटना पुनरावृत्ति का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन पुनरावृत्ति के संरचनात्मक संबंध के बारे में यह सब कहना आपको सीधे एक अनुच्छेद की ओर इंगित नहीं करता है। इस पर आपको थोड़ा और काम करना होगा।

अब, रणनीतिक क्षेत्रों का उद्देश्य समग्र रूप से पुस्तक में अंतर्दृष्टि प्रदान करना है। वास्तव में, एक बार जब आप अपने मुख्य छंदों या रणनीतिक क्षेत्रों की पहचान कर लेते हैं, तो यह पूछना महत्वपूर्ण है, ठीक है, ये वास्तव में कैसे हैं, ये मुख्य अंश पूरी किताब को कैसे रोशन करते हैं? यह वास्तव में मुख्य अनुच्छेद के कार्यों में से एक है। यह महत्वपूर्ण है या यह रणनीतिक है क्योंकि यह संपूर्ण पुस्तक के प्रमुख पहलुओं को खोलता है ताकि संपूर्ण पुस्तक में अंतर्दृष्टि प्रदान की जा सके, और वे वास्तव में पुस्तक की संरचना की ओर इशारा कर सकते हैं।

दूसरे शब्दों में, जब संरचनात्मक संबंधों के आधार पर प्रमुख छंदों या रणनीतिक क्षेत्रों की पहचान करने की बात आती है, तो आप पहचान सकते हैं, आप कह सकते हैं, ठीक है, आप जानते हैं,

इस पुस्तक के भीतर एक अंश है जो वास्तव में मुझे महत्वपूर्ण लगता है, यह मुझे महत्वपूर्ण लगता है, लेकिन यह मेरे द्वारा पहचाने गए किसी भी प्रमुख संरचनात्मक संबंध का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। यह आपके लिए एक संकेत हो सकता है कि आप एक प्रमुख संरचनात्मक संबंध से चूक गए हैं। मेरे पास वास्तव में ऐसे छात्र हैं जिन्होंने एक प्रमुख संरचनात्मक संबंध की पहचान की है क्योंकि उन्होंने एक मार्ग कुंजी पर विचार किया था, लेकिन यह उनके द्वारा पहचाने गए किसी भी प्रमुख संरचनात्मक संबंध का प्रतिनिधित्व नहीं करता था, और इसके कारण उन्हें वापस जाना पड़ा और पूछना पड़ा, क्या यहां कोई संबंध है क्या यह वास्तव में पुस्तक के इस अंश द्वारा सुझाया गया है? लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि यह निर्देश देगा कि समय सीमित होने पर तनाव और अध्ययन कहां करना है, जैसा कि लगभग हमेशा होता है।

दूसरे शब्दों में, जब व्याख्या की बात आती है तो यह आपको व्याख्यात्मक समय बिताने के लिए सबसे महत्वपूर्ण अनुच्छेदों की ओर संकेत करेगा। यदि आप किसी पुस्तक के प्रत्येक अंश की व्याख्या नहीं कर सकते हैं, तो ये प्रमुख छंद सुझाव देंगे कि ये वे अंश हैं, जो पुस्तक के एजेंडे के अनुसार, व्याख्यात्मक निवेश के लिए सबसे योग्य हैं। और वे उपदेश देने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, यहां टाइपो त्रुटि के लिए क्षमा करें, उपदेश नहीं, बल्कि उपदेश और शिक्षण पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

डॉ. ट्रेना वर्षों पहले की कहानी सुनाया करते थे जब वह न्यूयॉर्क शहर में बाइबिल सेमिनरी में संकाय में थे, जब उन्हें मार्बल कॉलेजिएट चर्च में बाइबिल की प्रत्येक पुस्तक पर बाइबिल अध्ययन की एक श्रृंखला देने के लिए कहा गया था, जो नॉर्मन विसेंट पील का चर्च था। मिडटाउन मैनेहट्टन में चर्च, लगातार बुधवार शाम को। और उन्हें बाइबिल की प्रत्येक पुस्तक के लिए एक घंटा दिया गया। तो, पहला सप्ताह, उत्पत्ति की पुस्तक, 50 अध्याय, एक घंटा, क्या करें? उन्होंने कहा कि प्रत्येक मामले में उन्होंने जो किया वह एक मुख्य मार्ग या एक रणनीतिक क्षेत्र लेना था, जो कि, क्योंकि इसका दायरा सीमित था, प्रबंधनीय था, लेकिन प्रत्येक मामले में उस मुख्य मार्ग के साथ इस तरह से काम करना था कि वह मार्ग एक बन जाए समग्र रूप से पुस्तक के संदेश में प्रवेश करें।

इसलिए, वह एक घंटे के समय के भीतर उस पुस्तक के एक या दो प्रमुख अंशों पर ध्यान केंद्रित करके प्रत्येक पुस्तक के आवश्यक संदेश को प्रबंधनीय तरीके से निपटाने में सक्षम था। मेरा एक पूर्व छात्र है जो यहां से पेंसिल्वेनिया में पादरी के पास गया, और उसने वापस आकर मुझे बताया कि उसने उपदेश देने की एक श्रृंखला में ऐसा किया था, कि वह लगातार रविवार को बाइबिल की कई पुस्तकों पर एक संपूर्ण उपदेश देने में सक्षम था। शाम और इसी तरह, फिर से उपदेश देकर, एक रणनीतिक मार्ग लेकर, वह उनका पाठ था, लेकिन उस पर इस तरह से उपदेश देना कि यह वास्तव में पूरी किताब के संदेश को कैसे विकसित करता है। पांचवीं चीज जो हम पुस्तक सर्वेक्षण के संदर्भ में करते हैं, वह उच्च महत्वपूर्ण डेटा की पहचान करना है, यानी, पुस्तक के भीतर डेटा जो उन मुद्दों पर आधारित है जिन्हें विद्वान महत्वपूर्ण परिचय के रूप में संदर्भित करते हैं।

उदाहरण के लिए, लेखक का व्यक्ति, लिखने का स्थान और तारीख, प्राप्तकर्ता और लिखने का अवसर। इस तरह की चीज़ में पुस्तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि शामिल है, जो निस्संदेह, जैसा कि

हमने पहले उल्लेख किया है, बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है। अब, इस बिंदु पर, हम द्वितीयक स्रोतों पर नहीं जाते हैं, बल्कि केवल पाठ के प्रत्यक्ष अध्ययन के आधार पर, पाठ स्वयं क्या कहता है? पाठ स्वयं क्या बताता है कि लेखक कौन था, प्राप्तकर्ता कौन थे, इस पुस्तक को लिखने का अवसर क्या था, इस तरह की बातें। यह वास्तव में महत्वपूर्ण है क्योंकि जब आप इस प्रकार के मुद्दों से संबंधित पुस्तक के भीतर जाएं तो डेटा से खुद को परिचित करते हैं, तो जब आप माध्यमिक स्रोतों पर जाते हैं और पढ़ते हैं कि विद्वान पुस्तक की पृष्ठभूमि के बारे में क्या कहते हैं, लेखक कौन है, यह कब थी लिखा, लिखने का अवसर क्या था, इस प्रकार की बातें, आप उस प्रकार की चर्चाओं को और अधिक अच्छी तरह से समझ सकेंगे।

आप बेहतर ढंग से समझते हैं कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। और संयोगवश, आप जो कह रहे हैं उसकी वैधता के आकलन के बारे में निर्णय लेने में सक्षम होंगे। हो सकता है कि कोई विशेष विद्वान लेखकत्व के संबंध में या यहां श्रोताओं के संबंध में कुछ दावे करेगा, लेकिन आप जानते हैं कि पुस्तक के भीतर ऐसे आंकड़े हैं जो वास्तव में किसी अन्य दिशा की ओर इशारा करेंगे।

यह वास्तव में आपको आश्चर्यचकित कर सकता है कि क्या वास्तव में यह विद्वान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संबंध में जो कहता है वह सटीक है। निःसंदेह, इसमें यहां ठोस निष्कर्षों के विरुद्ध अस्थायी विचार शामिल हैं। हम बस उस डेटा की पहचान कर रहे हैं जो पुस्तक के भीतर इस प्रकार की चीजों पर असर डाल सकता है।

और फिर अन्य प्रमुख प्रभाव, यह एक कैच-ऑल श्रेणी है। संपूर्ण पुस्तक से संबंधित कुछ भी जो आपको लगता है कि वास्तव में उल्लेख किया जाना चाहिए, लेकिन ए से ई के अंतर्गत, एक से पांच तक की संख्या के अंतर्गत फिट नहीं बैठता है, उसका उल्लेख यहां किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अमोस की पुस्तक में, यह दिलचस्प है कि अमोस, अमोस की पुस्तक में निर्माता ईश्वर की स्तुति के भजन हैं।

आपके पास इनमें से लगभग चार हैं जो अमोस की पुस्तक के दौरान सामने आते हैं। यह वास्तव में ऐसी चीज़ है जिस पर गौर किया जाना चाहिए और यह इस बिंदु पर यहीं फिट बैठेगी। आप रूथ की किताब में देख सकते हैं कि रूथ की किताब बेहद सकारात्मक है क्योंकि रूथ की किताब में कोई भी बुरे लोग प्रस्तुत नहीं किए गए हैं।

रूथ की किताब में कोई बदमाश नहीं हैं। सामान्य तौर पर कहानियों और विशेष रूप से बाइबिल की किताबों के संबंध में यह एक तरह से असामान्य है। वास्तव में कोई बुरे लोग नहीं हैं।

आपके पास कुछ लोग हैं जो दूसरों जितने अच्छे नहीं हैं। उदाहरण के लिए, ओर्पा को रूथ की तरह सकारात्मक रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया है, लेकिन उसने खुद को काफी सकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। और फिर, यह उस तरह की चीज़ हो सकती है, मेरा मतलब है कि यह सिर्फ एक सुंदर कहानी है क्योंकि रूथ की किताब में वास्तव में कोई बुराई नहीं है।

फिर, जब पुस्तक सर्वेक्षण की बात आती है तो जिस तरह की बात पर ध्यान दिया जा सकता है वह महत्वपूर्ण हो सकती है। मैथ्यू की पुस्तक में, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण हो सकता है कि

आपके पास यीशु के पाँच महान भाषण या पाँच महान प्रवचन हैं, जिनमें से प्रत्येक एक सूत्र के रूप में समाप्त होता है; जब यीशु ने ये बातें या ऐसी ही बातें पूरी कर लीं, तो वह आगे बढ़ गया। पुनः, पुस्तक के सर्वेक्षण में जिस प्रकार की बात का उल्लेख किया जाना चाहिए, वह जरूरी नहीं है, जरूरी नहीं कि पिछले क्षेत्रों में फिट हो, इसलिए आप इसका उल्लेख यहां कर सकते हैं।

यह वास्तव में रुकने के लिए एक अच्छी जगह है। जब हम वापस आते हैं, तो हम वास्तव में एक नमूना के रूप में, एक पुस्तक सर्वेक्षण करना चाहते हैं। और इसकी प्रत्याशा में, अगला वीडियो देखने से पहले, मैं आपसे जूड की पुस्तक पढ़ने का आग्रह करता हूँ।

यह केवल एक अध्याय लंबा है। जूड की पुस्तक पढ़ें और अपने आप से पूछें, यदि आप एक पुस्तक सर्वेक्षण करने जा रहे हों, तो आप क्या करेंगे? दूसरे शब्दों में, अपने रास्ते को महसूस करें कि आप प्रमुख ब्रेक कहाँ लेंगे, ब्रेकडाउन के संदर्भ में आप क्या करेंगे, और क्या आप इनमें से किसी भी संरचनात्मक रिश्ते को समझ सकते हैं जिसके बारे में हमने जूड की किताब में बात की है। यह आपका पहला अवसर हो सकता है, यदि यह आपका पहली बार है, जैसा कि संभवतः होगा, इस प्रकार का कार्य करने का।

अपने आप से बहुत अधिक अपेक्षा न रखें। यदि आप वह सब कुछ नहीं देखते हैं जो हम बता सकते हैं, तो अपने आप को कोसें नहीं, लेकिन आगमनात्मक दृष्टिकोण में, आप करके सीखते हैं। और इसलिए, यह केवल मैं जो कह रहा हूँ उसे सुनने और उसे आत्मसात करने का मामला नहीं है, बल्कि आप वास्तव में इसे बेहतर ढंग से समझेंगे।

हम जो कुछ भी कह रहे हैं वह बेहतर है, कि आप इसे बेहतर समझेंगे, और इन पुस्तकों के अध्ययन में स्वयं अभ्यास करते समय आप इसका उपयोग कर पाएंगे। इसलिए जूड की पुस्तक में आप जो कर सकते हैं वह करें, और फिर मुझे लगता है कि जूड की पुस्तक के सर्वेक्षण में हमने जो किया है उसके संबंध में आपने जो किया है उसे देखने में आपको बहुत मजा आएगा।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 7, पुस्तक सर्वेक्षण, प्राथमिक संरचनात्मक संबंध और प्रश्न है।